



सृजन

अंक - 38



हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे



एकता दिवस की झलकियाँ



संविधान दिवस

विरसा मुंडा जयंती

फोटोग्राफी - परमार्थ दास, प्रचार निरीक्षक, वाणिज्य विभाग, हावड़ा



शुभकामना संदेश

प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत हर्ष है कि मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, हावड़ा की प्रतिष्ठित राजभाषा पत्रिका 'सृजन' के 38वें संस्करण को आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह संस्करण विशेष रूप से इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि हम सभी हावड़ा स्टेशन की गौरवशाली शताब्दी वर्षगांठ का उत्सव मना रहे हैं। यह स्टेशन न केवल भारतीय रेल का एक ऐतिहासिक प्रतीक है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत और तकनीकी प्रगति का भी साक्षी रहा है।

'सृजन' का यह अंक हावड़ा स्टेशन की 100 वर्षों की यात्रा को समर्पित एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि है। इस ऐतिहासिक अवसर पर हम न केवल अतीत की उपलब्धियों को स्मरण करते हैं, बल्कि भविष्य की दिशा में भी प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

भारतीय रेल में हमारी भूमिका केवल परिचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि हम एक विचारशील, संवेदनशील और सृजनशील संस्था के रूप में भी कार्य करते हैं। हमारी आत्मा हमारी भाषा में बसती है और जब वह भाषा हमारी अपनी 'हिंदी' हो तो हर कार्य में आत्मीयता, स्पष्टता और गहराई स्वतः समाहित हो जाती है।

राजभाषा हिंदी केवल एक प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक चेतना, संवाद की सरलता और आत्मनिर्भरता का सशक्त माध्यम है। जब हम ग्राहकों से उनकी मातृभाषा में संवाद करते हैं, तो सेवा की भावना और विश्वास दोनों और भी प्रगाढ़ होते हैं।

'सृजन' का प्रकाशन इसी दिशा में एक प्रेरक प्रयास है। यह केवल एक दस्तावेज नहीं, बल्कि हमारी सोच, भाषा, नवाचार और साझे प्रयासों की जीवंत अभिव्यक्ति है। यह पत्रिका कर्मचारियों को कविता, लेख, अनुभव और नीतिगत जानकारी के माध्यम से रचनात्मकता से जोड़ती है।

मैं आप सभी से अपेक्षा करता हूँ कि आप राजभाषा हिंदी के प्रयोग को न केवल नियमित रूप से अपनाएँ, बल्कि उसे अपने कार्य का गर्वपूर्ण हिस्सा बनाएं। प्रत्येक स्टेशन, प्रत्येक कार्यालय, प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी इस दिशा में एक दूत बन सकता है और अन्य कार्मिकों के लिए प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है।

मैं संपादकीय टीम को इस सुंदर और प्रेरणादायक प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि आने वाले अंकों में भी हम इसी उत्साह, नवाचार और समर्पण का परिचय देते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित,


(विशाल कपूर)
मंडल रेल प्रबंधक
हावड़ा मंडल



शुभकामना संदेश



रेलवे केवल पटरियों और इंजनों का जाल नहीं, बल्कि गति, समर्पण और मानवीय संवेदनाओं की जीवंत कहानी है। इस विशाल तंत्र के बीच हर दिन करोड़ों यात्राएँ होती हैं कुछ मंजिल तक पहुँचती है, कुछ नए अनुभवों में बदल जाती है। इन्हीं यात्राओं के साथ जुड़ी भावनाएँ, संघर्ष और सपनों को शब्द देने का प्रयास है हमारी यह साहित्यिक पत्रिका 'सृजन'।

रेलवे परिवार का प्रत्येक सदस्य केवल कर्मठ कर्मचारी नहीं, बल्कि एक संवेदनशील मन भी है, जो सीटी की आवाज में लय ढूँढ़ता है, डिब्बों की गड़गड़ाहट में कविता सुनता है और यात्रा के धूलधूसरित मार्गों में जीवन का रंग तलाशता है। यही संवेदनशीलता 'सृजन' के 38वें अंक के हर लेख, कविता, कहानी आदि में झलकती है।

हमारा उद्देश्य केवल साहित्य का प्रकाशन नहीं, बल्कि उस मानवता और रचनात्मकता की लौ को प्रज्ज्वलित करना है जो हर रेलकर्मी के हृदय में सदा प्रज्ज्वलित रहती है। यह पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि रेल सेवा केवल मशीनों का संचालन नहीं अपितु एक भावनात्मक यात्रा भी है जो देश के कोने-कोने को जोड़ती है।

इस अंक को साकार करने में हमारे उन सभी सहयोगियों, लेखकों एवं पाठकों का अमूल्य योगदान रहा है जिन्होंने अपने कार्यालयी दायित्वों को पूरा करते हुए अपने शब्दों से इस पत्रिका को आत्मा दी है। प्रस्तुत पत्रिका में कहानी कविता के साथ-साथ कार्यालयी प्रयोग हेतु अंग्रेजी हिंदी के व्यवहारिक पर्याय को भी स्थान दिया गया है ताकि इसकी उपयोगिता बनी रहे।

हम आशा करते हैं कि हमारा यह प्रयास आपके मन में साहित्य के प्रति प्रेम, रुचि और अपनी रेल सेवाओं के प्रति गर्व की भावना को और भी प्रगाढ़ करेगा।

इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ हम आगामी अंक में आपके बहुमूल्य सुझावों एवं लेखों का हार्दिक स्वागत करेंगे।

(सौरिश मुखर्जी)

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

एवं

अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)/हावड़ा



शुभकामना संदेश



राजभाषा 'ई' पत्रिका 'सृजन' का 38वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका के प्रकाशन में आप सभी का सहयोग काफी सराहनीय है। हिंदी भाषा न केवल भारत की राजभाषा है अपितु संस्कृत के बाद वैयाकरणिक रूप से सर्वात्कृष्ट भाषा है। हिंदी भाषा को जन-जन की भाषा बनाने में पत्रिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। 'सृजन' पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में तीव्र गति से अग्रसर है।

पत्रिका के प्रकाशन में हमारा निरंतर यह प्रयास रहता है कि पत्रिका रुचिपूर्ण ज्ञानपरक होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी की कार्यालयी जानकारीयों से भी सुसज्जित हो। हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास होनी चाहिए। हम सभी का यह संकल्प होना चाहिए कि सरकारी कामकाज में धारा 3(3) का शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाय।

आशा है आप सभी को 'सृजन' पत्रिका का यह अंक बेहद पसंद आएगा। इस पत्रिका के आगामी अंकों को और बेहतर बनाने के लिए हम दृढसंकल्प हैं। आपके सुझावों और मनोभावों का हार्दिक स्वागत है। आप सभी को मेरी ओर से आने वाले नव वर्ष की ढेरों शुभकामनाएं !

(उदय कुमार केशरी)
अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रशा.)
हावड़ा



संपादकीय

हावड़ा मंडल के राजभाषा विभाग की 'सृजन' 'ई' पत्रिका के 38वें अंक का प्रकाशन, प्रसन्नता की बात है। प्रस्तुत अंक में कार्यालयी प्रयोग हेतु अँग्रेजी हिंदी के व्यवहारिक पर्याय के साथ-साथ रेलकर्मियों द्वारा रचित रचनाओं को प्रकाशित किया गया है। हर व्यक्ति के हृदय में कवि-लेखक-कथाकार छिपा होता है। जरूरत होती है उस प्रतिभा को रचना का रूप देकर उजागर करने की। सृजन पत्रिका रेल कर्मियों के लिए उनकी साहित्यिक अनुभूति को प्रस्तुत करने हेतु एक मंच उपलब्ध करवाती है जहां न केवल सृजनात्मक प्रतिभा तथा संवेदनाओं का प्रस्फुटन होता है बल्कि इसके माध्यम से कार्यालयों में हिन्दी पाठकों का एक वर्ग भी तैयार हो रहा है, जो साहित्य के सृजन के साथ-साथ कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार करने को भी प्रतिबद्ध है।

हावड़ा मंडल हिंदीक्षेत्र के अन्तर्गत आता है, ऐसे में अपनी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा को आत्मसात करना थोड़ा कठिन तो है पर असंभव नहीं है। अभ्यास वह चीज है जो प्रतिभा और कौशल के बीच का अंतर भरती है। अच्छी सोच के साथ कुछ भी हासिल किया जा सकता है। यह बताते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है कि हावड़ा मंडल के अहिंदी भाषी कर्मचारी अपनी लगन और सतत प्रयास से कार्यालयी कार्य के साथ-साथ राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित किसी भी प्रतियोगिताओं में अपना बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। उपरोक्त के अतिरिक्त हिंदी टंकण को सहज एवं रुचिकर बनाने हेतु राजभाषा विभाग के अनुवादकों द्वारा हावड़ा मंडल कार्यालय सहित स्टेशन कार्यालयों में भी हिंदी टंकण - मंगल फोन्ट एवं फोनेटिक (अँग्रेजी लिखने से हिंदी टंकण) पर कार्यशाला आयोजित की गई ताकि धारा 3(3) के अनुपालन सहित कार्यालयी कार्यों में राजभाषा में तीव्रता लाई जा सके। राजभाषा पखवाड़ा के दौरान मंडल कार्यालय सहित हावड़ा मंडल के कई स्टेशनों में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे चित्र देखो कहानी लिखो, ऑन लाइन प्रश्नोत्तरी, हिंदी निबंध लेखन जैसी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों की जयंती भी मनाने की एक पहल की गई तथा उनमें कर्मचारियों ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

'सृजन' 'ई' पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं उन रचनाकारों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपनी व्यस्ततम रेल सेवा के बावजूद भी अपनी लेखनी को अविराम गति देते हुए इसके प्रकाशन में अपनी अहम भूमिका निभाई है।

भविष्य के उज्ज्वल पथ की ओर एक नई शुरुआत के साथ शुभकामनाएं।

(सतेंद्र कुमार तिवारी)

प्रभारी राजभाषा अधिकारी

एवं

वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर

पर्यावरण एवं गृह रख-रखाव तथा माल भाड़ा/हावड़ा



सृजन

अंक - 38 वाँ

संरक्षकगण

विशाल कपूर
मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व रेलवे, हावड़ा

सौरिश मुखर्जी

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)
पूर्व रेलवे, हावड़ा

संपादक

सतेंद्र कुमार तिवारी
प्रभारी राजभाषा अधिकारी
एवं
वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर
पर्यावरण एवं गृह रख-रखाव
तथा माल भाड़ा, पूर्व रेलवे, हावड़ा

सहयोगी

सालुका लागुरी, आरती कुमारी मिश्रा,
बिकाश कुमार साव, सुमित सिंह,
सुभाष प्रसाद

संपर्क सूत्र : राजभाषा कक्ष,
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
पूर्व रेलवे, हावड़ा

निःशुल्क वितरण

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखक/
रचनाकार के अपने हैं। इसके लिए संपादक मंडल
किसी भी प्रकार से जिम्मेवार नहीं होगा।

राजभाषा अधिकारी पूर्व रेलवे, हावड़ा द्वारा प्रकाशित
कंप्यूटर-एन-मीडिया द्वारा मुद्रित

अनुक्रम

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृ.सं.
1.	दूसरी पारी	डॉ. वेंकटेश्वर पाण्डेय	6
2.	एक बेहतर भारत के निर्माण में स्काउट-गाइड की भूमिका	रोहन पटेल	8
3.	अंतरिक्ष स्टेशन में कैप्टेन शुभांशु शुक्ल	महेंद्र प्रसाद	10
4.	दादीजी का डिजिटल रूप : तकनीक से सीखने की प्रेरणा	सुमित सिंह	12
5.	काल	वर्षा प्रसाद	13
6.	दोबारा सोचिए	सोमा अधिकारी	14
7.	हुंकार	दिनेश कुमार	15
8.	मेक इन इंडिया	अनुराग कुमार	16
9.	एक दोस्त ऐसा भी !	कृष्ण कुमार रजक	17
10.	आजाद हिंद फौज की पहली महिला जासूस: नीरा आर्य	बिकाश कुमार साव	18
11.	स्टेशन मास्टर	कुमार विकास	19
12.	आधुनिक बचपन	संजीव कुमार पटेल	19
13.	जूते की मेहरबानी	नितेश कुमार सिंह	20
14.	घर-वापसी	दीप्ति महतो	22
15.	कार्यालयी प्रयोग हेतु अंग्रेजी हिन्दी के व्यवहारिक पर्याय		23





दूसरी पारी

डॉ. वेंकटेश्वर पाण्डेय

अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी
ऑर्थोपेडिक अस्पताल, हावड़ा

प्रतिमाह रेलवे सेवा से अवकाश प्राप्त अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक विदाई समारोह का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर रेल अधिकारियों द्वारा रेलवे में उनके योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद दिया जाता है। उनकी अर्जित निधि उन्हें दी जाती है और उनके भविष्य के लिए मंगल कामना भी की जाती है। उनका भविष्य सुख और आनंद से गुजरे इस लिए कुछ सुझाव भी दिए जाते हैं। उन सुझावों को यहाँ संकलित करने का प्रयास किया गया है।

कार्य की अवधि में सब का अपना-अपना अनुभव होता है। इस अवधि में कुछ मीठी, कुछ खट्टी कुछ कड़वी यादें जुड़ जाती हैं। बहुत कुछ मन का होता है, पर बहुत कुछ नहीं हो पाता है। मन में ऐसे विचार आते हैं की काश ऐसा हो पाता, काश वैसा हो पाता। बच्चन जी ने लिखा है मन का हो जाए तो अच्छा, न हो तो ज्यादा अच्छा।

अगर मन का न हो तो शायद ईश्वर ने हमारे लिए कुछ और ही अच्छा सोच कर रखा हो। वैसे मन को समझाने का भी यह एक तरीका हो सकता है। दूसरी पारी में आप अपने अधूरे सपने, अधूरी ख्वाहिशों को पूरी करने की कोशिश कर सकते हैं। उम्र बंधन नहीं है। आप मानसिक और शारीरिक रूप से सक्षम हैं तो आप सब कुछ कर सकते हैं।

सक्रिय सामाजिक जीवन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन में उसे परिवार की जरूरत है, दोस्तों की जरूरत है और विभिन्न सामाजिक कार्यों में उत्साहपूर्वक सम्मिलित होने की जरूरत है। अवकाश प्राप्ति पर ऐसा संभव है कि बेटा की शादी हो गई है और वे अपनी दुनिया में व्यस्त है। बेटा या तो दूसरे शहर या दूसरे देश में नौकरी कर रहा है और वहाँ अपनी पत्नी और बच्चों के साथ है। आप अपने जीवन साथी के साथ अपने घर में और पुरानी यादों के साथ समय काट रहे हैं। हो सकता है जीवन साथी ने भी

साथ छोड़ दिया हो। आपका जो पारिवारिक दायित्व है उसे पूरा करना है। संभव हो तो परिवार के साथ रहें। अलग रहने की स्थिति में संपर्क बनाये रखिए। सुविधा अनुसार आना-जाना होना चाहिए। दादा-दादी का नाती-पोतों के साथ अच्छा संबंध होता है। जहाँ पर माँ-पिता दोनों कार्य करते हैं, वहाँ दादा-दादी बच्चों की देखभाल में मदद कर सकते हैं। अनावश्यक हस्तक्षेप से बचना चाहिए। दोस्तों के साथ संपर्क रहना चाहिए। मुसीबत के समय वे काम आ सकते हैं। सामाजिक कार्यक्रम जैसे शादी, भोज, धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिस्सा लेना चाहिए।

नियमित दिनचर्या

अवकाश के बाद भी एक नियमित दिनचर्या होनी चाहिए। सक्रिय जीवन जीना है। प्रातः भ्रमण, योग, ध्यान, साधना, घर के जरूरी कार्य इत्यादि में व्यस्त रखना। सभी समय सोना या टीवी देखना उचित नहीं है।

स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना

स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना आवश्यक है। अगर अभी तक आप मधुमेह, उच्च रक्तचाप और दिल की बीमारी से मुक्त हैं, तो आप भाग्यवान हैं। रेलवे में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध है। इस सुविधा का लाभ उठायें। चिकित्सक की सलाह के अनुसार दवा लें। संतुलित आहार लें। सिगरेट, शराब और अन्य नशीले पदार्थों से बचें। प्रकृति के साथ समय बिताएँ।

आर्थिक योजना

रेलवे में अवकाश के समय आपको एक राशि मिलती है और पेंशन की भी सुविधा है। आप आर्थिक रूप से सक्षम हैं। आपको यह सोचना है कि आप जीवनभर आर्थिक रूप से किसी पर निर्भर नहीं रहें। इसलिए सावधानी और सूझ-बूझ से खर्च करें। परिवार में और किसी को आर्थिक रूप से सहायता करना चाहते हैं तो एक सीमा तक करिए। कुछ लोगों ने अवकाश



प्राप्त लोगों को ठगने का पेशा बना लिया है। ऐसे लोगों से सावधान रहें। साइबर अपराध से बचें। वरिष्ठ नागरिकों के लिए सरकार की बचत योजनाएँ हैं। उनका लाभ उठाएँ। अपनी वसीयत जरूर बनाएँ।

भ्रमण

नौकरी की अवधि में शिकायत रहती है कि छुट्टी नहीं मिलती है। अवकाश के बाद अब आपका समय आपके नियंत्रण में है। देश और दुनिया में बहुत कुछ घूमने लायक है। बहुत कुछ जानने लायक है। नदी, झरने, पहाड़, सागर, जंगल, हरी-भरी वादियाँ, मरुभूमि, अलग-अलग लोग, उनकी भाषा-संस्कृति, खानपान और भी बहुत कुछ। जो भी अब तक सोचा था और पूरा न हुआ हो, अब समय है, सब कुछ किया जा सकता है। पर यह बात ध्यान रखने लायक है कि आपका स्वास्थ्य ठीक हो। आप यात्रा करने में सक्षम हों। साथ में कोई हो जिसके साथ आप अपना सुख-दुख बाँट सके। देश-दुनिया के भ्रमण के बाद भी यह अनुभूति हो सकती है कि अपने घर की छत के नीचे, अपने बिस्तर पर, अपनों के साथ अपनी रसोई का खाने में ही सबसे अधिक सुख और शांति है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार - बहुत दूर, बहुत दिन और बहुत व्यय कर कई देश का भ्रमण कर देखने गया पहाड़ों की श्रृंखला और कई सागर, किन्तु आँख खोल कर नहीं देख पाया घर के पास ही एक धान के पौधे के शीष पर एक शिशिर की बूंद।

शौक पालिए

हर इंसान में कोई न कोई शौक होना चाहिए। अगर शौक नहीं है तो कोई शौक पालिए। पढ़ना, लिखना, गाना, बजाना, भजन-कीर्तन, बागवानी, चित्रकला, पालतू जानवरों को पालना इत्यादि। अपने शौक में रम जाईये, जिंदगी आनंद से भर जाएगी पर आपके शौक से

दूसरों का अहित न हो।

जनहित और जगहित

अगर आपके पास साधन है, सामर्थ्य है और इच्छा है तो आप जनहित और जगहित में योगदान दे सकते हैं। इस दान का अपना अलग ही संतोष होता है और लगता है कि मानव जीवन सफल हुआ।

राजकुमार सिद्धार्थ ने देखा की जगत में रोग है, जरा है, मृत्यु है। जगत के लोग दुखी हैं। उन्होंने गृहत्याग किया यह जानने के लिए कि जगत में इतना दुख क्यों है? कई वर्षों के बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और वे बुद्ध कहलाये। उन्होंने जाना कि रोग, जरा और मृत्यु तो प्रकृति का नियम है। इसे तो भोगना है, इसे स्वीकार करना है। दुख का कारण हमारी कामनायें हैं। अगर हम अपनी कामना पर नियंत्रण रख पाएंगे तो अपने दुख पर भी नियंत्रण रख पाएंगे।

सारांश

वर्तमान का आनंद लीजिए। कल बीत गया है और कल आने वाला है। जो है वो अभी है। उम्र के साथ शारीरिक दुर्बलता, रोग और दर्द को स्वीकार करें। जो है उसमें ही संतुष्ट रहिए। जो नहीं है उसके लिए दुखी न हों। क्षमा करिए - इसमें शांति है। जीवन का सार निम्न पंक्तियों में व्यक्त है।

पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया।

तीजा सुख कुलवंती नारी, चौथा सुख पुत्र हो आज्ञाकारी।

पंचम सुख स्वदेश में वासा, छटवाँ सुख राज हो पासा।

सातवाँ सुख संतोषी जीवन, ऐसा हो तो धन्य है जीवन।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गांधी



एक बेहतर भारत के निर्माण में स्काउट-गाइड की भूमिका

रोहन पटेल
कनिष्ठ लिपिक/
ईएनएचएम/हावड़ा

भारत एक विशाल और विविधतापूर्ण युवा देश है, जहाँ देश की सबसे बड़ी शक्ति उसका युवा वर्ग है भारत जैसे देश में, नागरिकों की भूमिका राष्ट्र निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण होती। इन्हीं युवाओं को सही दिशा और संस्कार देने का कार्य स्काउट और गाइड संस्था करती है। स्काउट गाइड न केवल बच्चों और किशोरों को सेवा, अनुशासन और नेतृत्व का पाठ पढ़ाती है, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है एवं यह भारत सरकार की कई योजनाओं और विशेष रूप से भारतीय रेलवे जैसे राष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर देश सेवा के व्यापक कार्यों में भी भागीदार बन चुका है।

स्काउट गाइड का परिचय : स्काउट गाइड एक अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन है जिसकी स्थापना 1907 में रॉबर्ट बैडन पॉवेल ने इंग्लैंड में की थी। भारत में यह आंदोलन 1909 में शुरू हुआ। स्काउट और गाइड संगठन का प्रमुख उद्देश्य है - 'युवाओं को सर्वांगीण विकास की दिशा में प्रेरित करना, बच्चों और युवाओं को नैतिक मूल्यों का ज्ञान देना, देशभक्ति जागृत करना ताकि वे जिम्मेदार, सेवाभावी और आत्मनिर्भर नागरिक बन सकें।'

स्काउट गाइड की मुख्य विशेषताएँ -

1. अनुशासन और आत्मनिर्भरता - स्काउट गाइड प्रशिक्षण के दौरान बच्चों को आत्मनियंत्रण, अनुशासन और कठिन परिस्थितियों में स्वयं निर्णय लेने की शिक्षा दी जाती है।

2. देशभक्ति और सेवा भावना - हर स्काउट और गाइड का मुख्य उद्देश्य 'सेवा' होता है। उनका आदर्श वाक्य है- 'सर्वदा तैयार'।

सामाजिक जिम्मेदारी - ये युवा समाज के कमजोर

वर्गों की मदद करते हैं, पर्यावरण संरक्षण करते हैं और संकट के समय राहत कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं।

बेहतर भारत के निर्माण में भूमिका

1. नैतिक और चरित्र निर्माण- स्काउट गाइड युवाओं में नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, दया, सहयोग और सहिष्णुता का विकास करते हैं, जो किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है।

2. सामाजिक एकता - यह संस्था धर्म, जाति और भाषा से ऊपर उठकर सभी को एक समान दृष्टि से देखना सिखाती है। इससे सामाजिक सौहार्द और एकता को बल मिलता है।

3. आपदा प्रबंधन में योगदान - बाढ़, भूकंप, आग या महामारी जैसी स्थितियों में स्काउट गाइड राहत कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं और सरकारी प्रयासों को सहयोग देते हैं।

4. पर्यावरण संरक्षण - स्काउट गाइड वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान और जल संरक्षण जैसे अभियानों में हिस्सा लेकर भारत को स्वच्छ और हरित बनाने में मदद करते हैं।

5. नेतृत्व और नागरिकता - स्काउट गाइड से प्रशिक्षित युवा नेतृत्व की क्षमता से भरपूर होते हैं। ये भविष्य में देश के कुशल नेता, शिक्षक, डॉक्टर, सैनिक और समाजसेवी बनने की प्रतिभा रखते हैं।

सरकारी नीतियों और अभियानों में स्काउट गाइड की सक्रिय भागीदारी

भारत सरकार ने युवाओं को सामाजिक अभियानों से जोड़ने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। स्काउट गाइड संगठन इनमें एक सशक्त भागीदार बनकर उभरा है -

1. स्वच्छ भारत अभियान - स्काउट गाइड सदस्य



रेलवे स्टेशनों, विद्यालयों, सार्वजनिक स्थलों एवं कार्य स्थल पर स्वच्छता का प्रचार-प्रसार करते हैं। भारतीय रेलवे के सहयोग से आयोजित स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत कार्यक्रम में स्काउट गाइड की भागीदारी उल्लेखनीय रही है।

2. फिट इंडिया और स्वास्थ्य जागरूकता - इन अभियानों के तहत, स्काउट गाइड युवाओं और यात्रियों को स्वास्थ्य, पोषण और योग के महत्व के बारे में जागरूक करते हैं। कई रेलवे स्टेशनों पर फिटनेस रैलियाँ, पोस्टर प्रदर्शन और संवाद कार्यक्रमों में इनकी प्रमुख भूमिका रहती है।

3. आपदा प्रबंधन और रेलवे सुरक्षा - रेलवे में दुर्घटनाओं या आपदाओं के समय स्काउट गाइड तत्पर रहते हैं। वे यात्रियों को सुरक्षित निकालने, प्राथमिक उपचार देने और रेलवे अधिकारियों के निर्देशों में सहयोग करते हैं। रेलवे सुरक्षा जागरूकता अभियान जैसे 'रेल सुरक्षा सप्ताह' में भी स्काउट गाइड छात्रों की बड़ी भूमिका होती है।

4. कोविड 19 महामारी के समय योगदान - महामारी के समय स्काउट गाइड स्वयंसेवकों ने रेलवे स्टेशनों पर मास्क वितरण, सामाजिक दूरी बनाए रखने और थर्मल स्क्रीनिंग में सहयोग किया। यह सरकार और रेलवे दोनों के लिए बहुत बड़ा समर्थन था।

भारतीय रेलवे में स्काउट गाइड का औपचारिक स्थान

भारतीय रेलवे ने स्काउट और गाइड को एक संस्थागत पहचान दी है। देशभर में रेलवे ज़ोन और मंडल में स्काउट गाइड की शाखाएँ स्थापित हैं। हमारे हावड़ा मंडल में भी स्काउट-गाइड की शाखाएँ हैं जो पूर्व रेलवे के अंतर्गत कार्य करती है। मंडल स्तर पर मंडल रेल प्रबंधक अध्यक्ष होते हैं।

विशेष पहल - रेलवे स्काउट-गाइड यूनिट का गठन हर ज़ोन में किया गया है। हर वर्ष आयोजित होने वाले रेलवे स्काउट गाइड रैलियों में हजारों युवा भाग लेते हैं।

रेलवे बोर्ड द्वारा विशेष बजट और संसाधन इन गतिविधियों के लिए आवंटित किए जाते हैं। स्काउट गाइड स्वयंसेवकों को मान्यता पत्र दिए जाते हैं।

एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करना - इन सबके माध्यम से स्काउट गाइड न केवल व्यक्तिगत विकास करते हैं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय विकास में सक्रिय भूमिका निभाते हैं -

राष्ट्रीय एकता को मज़बूत करते हैं।

गाँव-गाँव और शहर-शहर में सरकारी योजनाओं की जानकारी फैलाते हैं।

'डिजिटल इंडिया', 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियानों का प्रचार-प्रसार करते हैं।

निष्कर्ष

एक बेहतर भारत का निर्माण केवल सरकार या नीतियों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए हर नागरिक को आगे आना होगा। सरकार और रेलवे जैसे बड़े संस्थानों के साथ मिलकर ये युवा अनुशासित कार्यकर्ता, सेवाभावी, जिम्मेदार, और देशभक्त जागरूक नागरिक के रूप में राष्ट्र निर्माण में जुटे हैं। यदि स्काउट गाइड आंदोलन को और अधिक बढ़ावा मिले और भारत का हर बच्चा स्काउट गाइड की शिक्षा और आदर्शों को अपनाए, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व में एक आदर्श राष्ट्र के रूप में खड़ा होगा।

“आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल ‘कमल’ के समान है, जिसका एक-एक दल, एक-एक प्रांतीय भाषा और उसकी साहित्य संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा ही नष्ट हो जायेगी। हम चाहते हैं कि सब प्रांतीय बोलियाँ, जिनमें सुन्दर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने-अपने घर में (प्रांत में) रानी बनकर रहे- प्रांत के जन-गण की हार्दिक चिन्ता की प्रकाश भूमि-स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य मणि ‘हिन्दी’ भारत-भारती होकर विराजती रहे।”

- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर



अंतरिक्ष स्टेशन में कैप्टेन शुभांशु शुक्ल

महेंद्र प्रसाद

मुख्य टिकट निरीक्षक (सा.)

पूर्व रेलवे / हावड़ा

21वीं सदी विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युद्ध युग है, और इसमें अंतरिक्ष अनुसंधान का विशेष स्थान है। भारत ने भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। हाल ही में भारतीय वैज्ञानिक शुभांशु शुक्ल का अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर जाना एक ऐतिहासिक उपलब्धी बन गया है। यह घटना केवल एक व्यक्ति की उपलब्धी नहीं बल्कि भारत की वैज्ञानिक प्रगति, आत्मनिर्भरता और वैश्विक पहचान का प्रतीक है।

शुभांशु शुक्ल अंतरिक्ष में भारत की नई पहचान

शुभांशु शुक्ल का अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचना केवल एक व्यक्तिगत सफर नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय गौरव की यात्रा है। ये पूर्णतः 'ISRO' द्वारा प्रशिक्षित और चयनित पहले वैज्ञानिक हैं जो मानव युक्त अंतरिक्ष मिशन का हिस्सा बने। उनका यह मिशन भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम 'गगनयान' की सफलता और उसके भविष्य के विस्तार की दिशा में एक निर्णायक कदम है।

1. भारत के लिए इस मिशन का महत्व : राष्ट्रीय गौरव और आत्मनिर्भरता का प्रतीक

राष्ट्रीय गौरव और आत्मनिर्भरता का प्रतीक शुभांशु शुक्ल का अंतरिक्ष में जाना भारत के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण है इससे यह साबित होता है, कि भारत अब अंतरिक्ष में केवल उपग्रह भेजने तक सीमित नहीं बल्कि



मानवयुक्त मिशन भी सफलता पूर्वक संचालित कर सकता है। यह आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक ठोस कदम है।

2. वैश्विक मंच पर उपस्थिति

यह मिशन भारत को उन चुनिंदा देशों की सूची में शामिल करता है, जो सफलता पूर्वक अंतरिक्ष में मानव भेज चुके हैं, इससे भारत की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है और भारत अब अंतरिक्ष विज्ञान में एक निर्णायक भूमिका निभाने की ओर अग्रसर है।

3. वैज्ञानिक समुदाय के लिए प्रेरणा

शुभांशु शुक्ल जैसे वैज्ञानिकों की सफलता देश के नवयुवकों को विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित करेगी। यह युवाओं को यह दिखाता है कि अब भारत में भी वैश्विक स्तर के मिशनों में भाग लेने के अवसर उपलब्ध हैं।

आर्थिक और तकनीकी लाभ

1. इस मिशन के लिए जो तकनीकी ढांचा विकसित किया है जैसे कि अंतरिक्षयान निर्माण, जीवन-समर्थन प्रणाली, अंतरिक्ष में संचार प्रणाली - वह भारत के तकनीकी कौशल को अगले स्तर तक ले गया है। इन तकनीकों का उपयोग नागरिक और रक्षा क्षेत्रों में भी किया जा सकता है।

2. निजी क्षेत्र के लिए अवसर

इस मिशन ने निजी भारतीय कंपनियों को भी अंतरिक्ष तकनीक से जुड़ने का अवसर दिया। मेक इन इंडिया पहल के तहत ISRO में कई उपकरण और कई तकनीकें देश में ही विकसित की, जिससे घरेलू उद्योगों को भी मजबूती मिली।

3. निवेश और रोजगार

इस प्रकार के हाइटेक मिशन अधिक निवेश



आकर्षित करते हैं साथ ही, इनसे हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से रोजगार मिलता है- इंजीनियर, वैज्ञानिक, तकनीशियन से लेकर निर्माण और सप्लाय चैन में कार्यरत लोगों तक।

ISRO के लिए एक नए युग की शुरुआत

1. गगनयान की सफलता

शुभांशु शुक्ल का यह मिशन ISRO के गगनयान कार्यक्रम का हिस्सा है। यह मानवयुक्त मिशन ISRO के लिए एक बड़ी छलांग है और इससे यह संस्था विश्व की अग्रणी अंतरिक्ष एजेंसियों जैसे नासा, रोसकोमॉस और ईएसए के समकक्ष खड़ी हो गई है।

2. भविष्य की योजनाएं

ISRO अब चंद्रमा और मंगल पर मानव भेजने की योजना पर भी काम कर रहा है। शुभांशु के मिशन ने इन सपनों को साकार करने की राह खोल दी है।

3. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

भारत अब अंतरिक्ष अभियानों में तकनीकी सहयोग देने में साझा मिशन संचालित करने की स्थिति में है। इससे ISRO को अन्य देशों के साथ मिलकर जटिल मिशन पूरा करने की क्षमता मिलेगी।

भविष्य की संभावनाएँ

1. भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन की योजना

इस मिशन की सफलता के बाद भारत ने 2035 तक अपना अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। शुभांशु के अनुभव इस दिशा में अहम भूमिका निभाएंगे।

2. स्पेस टूरिज्म और कर्मशियल मिशन

जिस तरह अमेरिकी निजी कंपनियां स्पेस टूरिज्म की दिशा में आगे बढ़ रही हैं, उसी तरह भारत में भी संभावना बढ़ गई है। ISRO के अनुभव और शुभांशु जैसे यात्रियों की जानकारी का लाभ भविष्य की व्यवसायिक उड़ानों में लिया जा सकता है।

3. अंतरिक्ष में जैविक और चिकित्सा अनुसंधान

शुभांशु शुक्ल के मिशन के दौरान किए गए प्रयोगों से अंतरिक्ष में मानव शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों की गहन जानकारी मिली है। इससे अंतरिक्ष चिकित्सा और जैविक अनुसंधान में भारत को बड़ी मदद मिलेगी।

4. शिक्षा और विज्ञान संचार

इस तरह के मिशनों से देश में विज्ञान के प्रति जिज्ञासा और रुचि बढ़ती है। शुभांशु शुक्ल की कहानी स्कूलों और कॉलेजों में विज्ञान शिक्षा को प्रेरित करेगी। उनका अनुभव नई पीढ़ी के लिए एक जीवंत पाठ्य पुस्तक बन सकता है।

शुभांशु शुक्ल का स्पेस स्टेशन पर पहुंचना केवल एक वैज्ञानिक मिशन नहीं बल्कि एक राष्ट्रीय उपलब्धी है। यह उस भारत की झलक देता है, जो विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में आत्मनिर्भर है, जो अंतर्राष्ट्रीय मंच पर बराबरी के साथ खड़ा है और जो अपने युवाओं को सपने देखने और उन्हें साकार करने की ताकत देता है। यह मिशन ISRO के लिए एक नई सुबह है।

शुभांशु शुक्ल जैसे वैज्ञानिकों का साहस, समर्पण और परिश्रम भारत की अगली पीढ़ी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा। आने वाले वर्षों में जब भारत अपना अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करेगा या चंद्रमा पर मानव भेजेगा, तब ये जरूर कहा जाएगा- शुरुआत शुभांशु से हुई थी।





दादीजी का डिजिटल रूप : तकनीक से सीखने की प्रेरणा

सुमित सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
पूर्व रेलवे, हावड़ा

गाँव के किसी कोने में, एक शांत और पुरानी हवेली में रहने वाली दादीजी को जब उनके बेटे ने स्मार्टफोन भेंट किया, तो पूरे घर में एक हलचल मच गई। ये वही दादी थीं, जो दीवार घड़ी को थपथपा कर चलाने में विश्वास रखती थीं, और अब उनके हाथ में था आधुनिक युग का सबसे बड़ा आविष्कार स्मार्टफोन। अब पूरा घर यह देखने को उत्सुक था कि - आधुनिकता और परंपरा की इस संगम का परिणाम क्या होगा !

पहला दिन : जब टचस्क्रीन ने हार मानी।

दादीजी ने फोन को गौर से देखा, माथे पर चश्मा ठीक किया और पूछा, 'बेटा, इसमें घी, कपूर लगाना पड़ेगा या ऐसे ही चलेगा ?'

बेटे ने हंसकर बताया - 'अम्मा, इसमें उँगली से टच करना होता है।'

दादीजी ने हल्की उँगली घुमाई कोई हरकत नहीं ! फिर हथेली से थपथपाया, जैसे पुरानी पड़ी घड़ियों को थपथपाकर चालू कर दिया करती थी, फिर भी कुछ नहीं। अंततः, उन्होंने गुस्से से फोन से कहा, 'चल जा, वरना कल से तुझे मटर के डिब्बे में बंद कर दूंगी, तब चलेगा क्या ?' यह बोलते हुए उन्होंने फोन के सभी बटनों को दबाया आश्चर्य और चमत्कार के साथ फोन ऑन हो गया ! दादी के चहरे पर मंद-मंद मुस्कान आयी और इस तरह दादी ने फोन पर पहली जीत हासिल कर लिया।

पासवर्ड की पहली और देसी समाधान

जब पोते ने दादी को समझाया कि दादी फोन को सुरक्षित रखने के लिए पासवर्ड रखना होता है तो दादीजी तुरंत घर की तिजोरी की चाबी स्क्रीन पर रख दी और बोलीं, 'अब कोई चोरी नहीं कर सकता !' इस पर पोते ने दादी से कहा- 'दादी आप अपनी उंगलियों से इसे सुरक्षित रख सकती है और फिर पोते ने दादी के उंगलियों के साथ फोन में फिंगरप्रिंट लॉक सेट कर दिया।'

अब जब भी फोन खोलना होता, दादीजी पहले हाथ धोतीं और फिर बड़े गर्व से हंसते हुए कहतीं, 'देखो, अब

यह मुझे पहचान जाएगा और फोन खुल जाता है !'

व्हाट्सएप और संदेशों की अनोखी दुनिया

अब दादी व्हाट्सएप पर संदेशों को भेजना सीख रही है। दादी अब आधुनिकता से जुड़ रही है।

दादी को पहला व्हाट्सएप ऑडियो मैसेज आया- 'दादीजी, कैसी हैं ?'

दादीजी ने जवाब दिया- 'बेटा, मैं ठीक हूँ। कपड़े साफ करने वाले आए थे। सोची तुम्हारा फोन भी दे दूँ वह बहुत दिनों से साफ नहीं हुआ है।'

पोता हड़बड़ा कर बोला- 'दादी, इसकी सफाई कपड़े सफाई करने वाले नहीं करते, इसकी सफाई आपको कपड़ों से करना है और पानी से दूर रखना है !'

तब दादी बोली मतलब यह बिन सफाई के ही रह सकती है।

पोता बोला- जी अम्मा।

वीडियो कॉल- जब दादीजी को खुद से प्यार हुआ

जब दादीजी ने पहली बार वीडियो कॉल पर खुद को देखा, तो चौंक गई - 'अरे ! यह कौन है ?'

पोता हंसा, 'दादीजी, आप ही हैं !'

दादीजी मुस्कराई, अपने बाल ठीक किए और बोलीं, 'अच्छ ! मैं बहुत सुंदर लग रही हूँ !'

दादी जी ने दूर बैठे अपने पोते को भी देखा और आश्चर्य, खुशी और संवेदनाओं के साथ अपने पोते से कहा यह फोन बहुत अच्छा है।

दादी कहती है दूर बैठे भी बेटा तू मुझे नजर आता है। यह कहकर दादी की आँखें आंसूओं से भर जाती है।

सोशल मीडिया पर दादीजी की धूम और प्रेरणा

अब दादीजी इंटरनेट पर अपनी शब्दों से छा गई। हर दिन व्हाट्सएप स्टेटस डालतीं - 'आज की सीख फोन चार्ज रखना, वरना भगवान से संपर्क टूट सकता है !'

'जब जीवन में कोई दिक्कत आए, तो उसे री-स्टार्ट कर दो, जैसे मोबाइल !'

'तकनीक से डरने की जरूरत नहीं, इसे अपनाओ,



क्योंकि सीखने की कोई उम्र नहीं होती !'

सभी लोग उनके विचारों को पसंद करते हैं और अन्य लोगों के साथ उनके विचारों को साझा करते हैं।

अंत में जब परंपरा और आधुनिकता ने हाथ मिलाया

कुछ महीनों में, दादीजी तकनीक की रानी बन गईं। सोशल मीडिया पर अचार बनाने की वैज्ञानिक विधियाँ एवं अन्य खाना बनाने की विधियाँ पोस्ट करती हैं जिसे लोग बहुत पसंद करते हैं। वीडियो कॉल पर अब वह रिश्तेदारों को आशीर्वाद देतीं और हर दिन नया सीखने के लिए तैयार रहतीं।

निष्कर्ष - आगे बढ़ने की राह हमेशा खुली होती है।

मनुष्य का स्वभाव हमेशा विकास की ओर बढ़ने का होता है। यह विकास सिर्फ शारीरिक या आर्थिक नहीं,

बल्कि मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक भी होता है। हम अक्सर मानते हैं कि सीखने की प्रक्रिया केवल बचपन और युवावस्था तक सीमित होती है, लेकिन वास्तविकता यह है कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। चाहे तकनीक की दुनिया हो, कोई नया कौशल सीखना हो, या फिर जीवन की कठिन राहों से सबक लेना हो हर बदलाव हमें आगे बढ़ने का मौका देता है। जब हम परंपरा के साथ आधुनिकता को अपनाते हैं, तो हम खुद को और अपने समाज को आगे ले जाने में सक्षम होते हैं।

जैसे दादीजी ने सिखाया कि परंपरा और आधुनिकता जब साथ आती हैं, तो जीवन और भी सुंदर, सुगम और रोचक बन जाती है !

काल

वर्षा प्रसाद

पत्नी-सुभाष प्रसाद

कनिष्ठ अनुवादक, पूर्व रेलवे, हावड़ा

आज के समय में अगर कुछ प्रासंगिक तथ्यों की बात करे तो काल-खंड सबसे महत्वपूर्ण लगता है। वैसे काल को हम भूत, भविष्य और वर्तमान की श्रेणियों में विभाजित करते हैं। अब प्रश्न यह है कि किसे सबसे अधिक प्राथमिकता दिया जाय? भूत, भविष्य या वर्तमान तीनों ही समय के महत्वपूर्ण पहलू हैं। इनमें से प्रत्येक का अपना एक विशेष महत्व है और हमारे जीवन पर इसका अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। तीनों काल ही अपने आप में महत्वपूर्ण हैं परंतु सभी का योगदान भी हमारे जीवन में अलग-अलग पड़ता है।

भूत, यानी कि अतीत, हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें हमारे अनुभवों और गलतियों से सीखने का अवसर प्रदान करता है। हम अपने अतीत की गलतियों से सीखकर अपने वर्तमान और भविष्य को बेहतर बना सकते हैं। लेकिन, अतीत में रहना भी हमारे लिए हानिकारक हो सकता है। हमें अपने अतीत की गलतियों को भूलकर आगे बढ़ना चाहिए।

भविष्य, यानी कि आने वाला समय, हमारे जीवन का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें अपने लक्ष्यों और सपनों को पूरा करने का अवसर प्रदान करता है। हम अपने भविष्य के लिए योजनाएं बनाकर और मेहनत करके अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन,

भविष्य के बारे में चिंता करना भी हमारे लिए हानिकारक हो सकता है। हमें अपने वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करके अपने भविष्य को बेहतर बनाना चाहिए।

वर्तमान, यानी कि यह समय, हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हमें अपने लक्ष्यों को पूरा करने और अपने सपनों को सच करने का अवसर प्रदान करता है। हम अपने वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करके अपने भविष्य को बेहतर बना सकते हैं। लेकिन, वर्तमान में रहना भी हमारे लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। हमें अपने वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करके अपने लक्ष्यों को पूरा करना चाहिए।

निष्कर्ष में, भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों ही समय के महत्वपूर्ण पहलू हैं। हमें अपने अतीत से सीखना चाहिए, अपने भविष्य के लिए योजनाएं बनानी चाहिए और अपने वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करके अपने लक्ष्यों को पूरा करना चाहिए।

कालिदास : 'समय का सदुपयोग करो, काल का इंतजार मत करो।'

कबीर : 'काल चक्र में सब कुछ बदलता है, समय की धारा में सब कुछ बहता है।'

तुलसीदास : 'समय का महत्व समझो, काल का इंतजार मत करो।'



दोबारा सोचिए

सोमा अधिकारी

लेखा सहायक, वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक
पूर्व रेलवे, हावड़ा

कर्तव्य और दायित्व का दूसरा नाम है 'अभिभावक'। हम सभी अभिभावक अपनी पूरी जिन्दगी अपने खुद के कर्तव्यों और दायित्वों के पालन में कोई चूक न हो जाए इसी में लगे रहते हैं। हम जिस दिन अभिभावक बनते हैं उसी दिन से प्रयत्नशील होते हैं ताकि अपनी संतान को उत्तम से उत्तम परवरिश दे सकें। खुद को आर्थिक, सामाजिक और मानसिक रूप से इतना समृद्ध बनाये कि उनके जीवन में कोई कमी न हो। पिता बच्चों की आर्थिक माँगों तथा जरूरतों को पूरा करने के कर्तव्य में और माँ उन्हें जीवन की आवश्यकताओं को सम्पूर्ण करने की कला सिखाने के दायित्वों में रम जाते हैं। दोनों मिलकर उसे एक अच्छा अर्थात् सफल कैरियर बनाने या चुनने में अपना पूर्ण योगदान देते हैं, क्योंकि आज के युग में सन्तान के चमकदार और बड़े नाम वाला कैरियर के बिना न तो एक पिता को अपने कार्यस्थल और दोस्तों में और न ही माँ को अपनी सहेलियों और सगे-संबंधियों में मान रहता है। अपने अभिमान और अहं को संतुष्ट करने में न केवल हम अपना बल्कि अपनी संतान का भी सुख-चैन सब खो रहे हैं। हम आज के अभिभावक अपने बच्चों को एक अच्छा भविष्य देने के बजाए खुद के सपनों को पूरा करने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। खुद जो नहीं बन पाये या नहीं कर पाये वो सब अपने बच्चों के द्वारा करवाने की चेष्टा करते हैं और अनजाने में ही उनके ऊपर बोझ डाल देते हैं।

अपनी संतान के कैरियर के विषय में सोचना क्या गलत है। उनको एक अच्छा कैरियर देना या उस ओर उन्हें अग्रसर करना, प्रेरित करना तो माता का ही कर्तव्य है। ऐसे ही कुछ विचार आपके मन में आ रहे होंगे। हाँ, एकदम सही, परंतु आपने कभी सोचा है कि क्या आपके माता-पिता आपके बचपन में आपके कैरियर को लेकर कभी चिंतित हुए थे। जी नहीं, आपको एक तनाव रहित, दबाव मुक्त बचपन मिला था। जहाँ आपने जी भरकर खेला, दौड़ा और साँस लिया। आपके पास आपके

बच्चों के जैसा घुटन भरा, हमेशा प्रतियोगिता का सामना करना और आशानुरूप परिणाम न करने पर ताना सुनने वाला बचपन नहीं था। आपने अपने बचपन में रचनात्मक और प्रयोगात्मक पढ़ाई की। अंक या स्थान का महत्व हमारे लिए अधिक मायने नहीं रखती थी तभी तो यौवन आते-आते हमारे खुद के कैरियर की दिशा हमारे लिए स्पष्ट हो सके। परिणामस्वरूप आप और हम आज एक कामयाब जीवन बीता रहे हैं। लेकिन हम अपने बच्चों के साथ क्या कर रहे हैं? केवल अंक, अंक और अंक, अधिकाधिक अंक प्राप्त करने के पीछे माता-पिता और विद्यार्थी सब दौड़ रहे हैं। इस दौड़ में जो जीतता है वह कामयाब होगा और जो नहीं जीत पाता उसका जीवन व्यर्थ होगा ऐसी भावना उसके मन में डालते हैं। आज केवल परीक्षा में प्राप्त होने वाले अंक के आधार पर ही एक शिशु की योग्यता को मापा जाता है। आप और हम जो दायित्वशील और कर्तव्यपरायण अभिभावक होने का दावा करते हैं, क्या हमारे लिए इस प्रकार का निर्णय देना या निष्कर्ष पर पहुंचना उचित है? समय निकाल कर सोचिए।

जो विद्यार्थी परीक्षाओं में अच्छा अंक लाने में सक्षम होता है, उसके लिए इस प्रकार विचार मायने नहीं रखता था। हम देख सकते हैं इससे उसका मनोबल बढ़ता है, जो उन्हें सकारात्मक शक्ति देती है। कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो औसत अंक प्राप्त करते हैं, उनके लिए इस प्रकार के विचार दो तरह से प्रभाव डालते हैं। कुछ इस आलोचना को सकारात्मकता के साथ ग्रहण करते हैं और जीवन में अधिक मेहनत करने की ठान कर इस दौड़ में शामिल हो जाते हैं और कुछ पर इस आलोचना या विचार का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है एवं वे शिक्षा के प्रकाश से दूर चले जाते हैं। अंत में आते हैं वे विद्यार्थी जो अंक नहीं ला पाते या फेल हो जाते हैं। उन पर इन विचारधाराओं का इतना प्रभाव पड़ता है कि उनका मनोबल ही टूट जाता है। आत्मविश्वास समाप्त हो जाता



है। जीवन में, किसी भी पेशा या कैरियर को चुनने और सफल होने की कोई भी उम्मीद उनमें नहीं रहती। कभी-कभी तो मेधावी तथा औसत छात्र भी अंकों के इस बवंडर में ऐसे फंस जाते हैं कि परीक्षा के बाद आने वाले परिणाम का सामना करने में भी डरते हैं। यह भय और आतंक उन पर इस कदर हावी होता है कि वे अपने जीवन तक का अंत करना इस भय या अपने अभिभावकों का सामना करने की अपेक्षा सहज समझते हैं। ऐसी घटनाओं के बारे में दूरदर्शन तथा अखबारों में अक्सर हम देखते और सुनते हैं।

शायद अब वक्त आ गया है हम माता-पिताओं को अपना झूठा अहंकार और दिखावटी दुनिया से निकलकर अभिभावक बनने की शिक्षा लेने की। अगर आपकी संतान किसी परीक्षा में चाहे वह कितनी भी बड़ी परीक्षा क्यों न हो अच्छे अंक या आपके आशानुरूप परिणाम नहीं कर पाता तो सगे संबंधियों, दोस्तों तथा पड़ोसियों को उसकी आलोचना करने दें परन्तु आप उसके साथ रहें। उसके आत्म सम्मान को गिरने न दें। उसके मनोबल को कभी टूटने न दें। कोई भी परीक्षा अंतिम नहीं होती। हो सकता है यह परीक्षा उसके कैरियर के लिए नहीं है। उसके लिए शायद जीवन ने कुछ बड़ा और अच्छा सोच कर रखा है। इसके अलावा दोबारा कोशिश करने में भी कोई शर्मिंदगी नहीं होनी चाहिए। यदि आप उसका समर्थन करें, साथ दें और प्रोत्साहित करें, क्योंकि कवि ने खूब कहा है- 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।' इसके अतिरिक्त परीक्षा के बाद मिलने वाला परिणाम का वह छोटा-सा कागज का टुकड़ा आपके बच्चे का भविष्य बना सकता है। उसका भविष्य बनाना तो केवल तभी संभव है जब आप उसके साथ हो और हमेशा पास खड़े रहो।

अभिभावक का कर्तव्य केवल कड़ा शासन करना और दूसरों के साथ तुलना कर समालोचना करना ही नहीं है बल्कि अभिभावक तो वह है जो कठिन स्थिति में बड़े भाई के जैसे साथ खड़े रहें। दुःखी होने पर बड़ी दीदी के समान संभालें, मनोबल बढ़ाये एवं उत्साहित करें। माँ के समान गलतियों पर शर्मिंदा न होकर उनसे सीख लेना सिखायें। उन पर पूर्ण विश्वास करें एवं प्यार-दुलार ऐसा दें जैसा दादा-दादी। दोस्तों के समान उनकी हर खुशी में शामिल हो और पिता के समान सभी परिस्थितियों में मार्ग दर्शन दें और दुनियादारी के घिनौने रूप से उनका परिचय करवायें और सामना करें- अर्थात् अभिभावक एक विद्यार्थी या उनके संतान के जीवन का वह चालक है जो चाहे तो उचित मार्ग दर्शन के द्वारा अच्छा इंसान तथा कामयाब जीवन दें या फिर उन्हें जीवन के प्रति हताशा एवं नकारात्मक विचार भर दें। अब चयन आपको करना है। इसलिए सोचिए....

हुंकार

दिनेश कुमार

प्रशिक्षु कनिष्ठ इंजीनियर
ईएमयू/कारशेड/हावड़ा

सुनो हे सपनों के घरोंदे के निर्माता
तोड़े तुमने वो सारे सपने
किये थे तुमने वो सुन्दर वादे
दिखाये थे तुमने सुसज्जित आसियाने
दिये थे तुमने सुख-सुविधाओं का आश्वासन
हुआ न पूरा तुमरा एक भी वादा
सब किये थे तुमने झूठे वादे।
सुनो हे सपनों के घरोंदे के सौदागर
घरोंदों के क्रेताओं ने भरी तुमरी झोलिं सारी,
दिये तुमको आशाओं की कमाई की
जमा-पूंजी व ज्वेलरी सारी।
साकार हो ना सका तुम्हारा एक भी प्रण
धरातल पर उतर ना सका तुम्हारा एक भी कर्म।
शांत हूँ, संयमित हूँ, ना समझ तू मैं दुर्बल हूँ
गवाह है इतिहास हक की लड़ाई की
पांडवों के अधिकार व न्यायों की।
संयम का अब समय नहीं,
हुआ प्रतीक्षा बहुत अधिक
हो एकत्रित और संगठित
बान्धों मुट्ठी करो चढ़ाई
ये है तुम्हारी हक की लड़ाई।
सुनो हे घरोंदो के सौदागर ।



मेक इन इंडिया

अनुराग कुमार

कनिष्ठ लिपिक,

वरिष्ठ मंडल इंजीनियर समन्वय, हावड़ा

भारत एक प्राचीन, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से समृद्ध राष्ट्र रहा है, परंतु उपनिवेशवाद और आर्थिक शोषण के कारण देश की विकास गति बाधित हुई है। आजादी के बाद अनेक योजनाएं बनीं, परंतु वर्ष 2014 में भारत सरकार ने 'मेक इन इंडिया' अभियान की शुरुआत करके आत्मनिर्भरता की दिशा में एक सशक्त कदम उठाया है। इस योजना का उद्देश्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाना है।

‘मेक इन इंडिया की परिभाषा और उद्देश्य’

मेक इन इंडिया एक सरकारी पहल है, जिसकी घोषणा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 25 सितंबर 2014 को की थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारत में उत्पादन को बढ़ावा देना, निवेश आकर्षित करना, नवाचार को प्रोत्साहित करना और रोजगार के अवसर पैदा करना है। इस योजना के तहत विदेशी एवं घरेलू कंपनियों को भारत में उत्पादन करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

उद्देश्य :- भारत को मैन्युफैक्चरिंग हब बनाना, युवाओं को रोजगार उपब्ध करना, विदेशी निवेश (एफडीआई) को आकर्षित करना, निर्यात को बढ़ावा देना, आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना।

मेक इन इंडिया के अंतर्गत सरकार ने 25 क्षेत्रों को प्राथमिकता दी है, जैसे - 1. ऑटोमोबाइल 2. रक्षा उपकरण 3. रेलवे 4. इलेक्ट्रॉनिक्स 5. सूचना प्रौद्योगिकी (आई टी) 6. फार्मास्यूटिकल 7. टेक्सटाइल एवं परिधान 8. जैव प्रौद्योगिकी 9. तेल और गैस 10. ऊर्जा 11. कृषि और खाद्य प्रसंस्करण 12. पर्यटन एवं आतिथ्य 13. खनन 14. रसायन 15. बंदरगाह और जलमार्ग इन क्षेत्रों में निवेश और तकनीकी विकास को प्राथमिकता दी गई है।

मेक इन इंडिया की प्रमुख विशेषताएँ

1. एफडीआई में वृद्धि - भारत ने कई क्षेत्रों में

100% एफडीआई की अनुमति दी है, जिससे विदेशी कंपनियां आसानी से निवेश कर रही हैं।

2. लाइसेंस प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाया गया है।

3. इंफ्रास्ट्रक्चर विकास - स्मार्ट सिटी, औद्योगिक कॉरिडोर और बंदरगाहों का विकास तेजी से हो रहा है।

4. स्किल इंडिया के साथ तालमेल - युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

5. नई स्टार्टअप नीतियाँ - नवाचार और स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया गया है।

मेक इन इंडिया के लाभ

1. रोजगार सृजन - युवाओं को बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर मिले हैं।

2. विदेशी मुद्रा की बचत - आयात में कमी लाकर भारत को विदेशी मुद्रा की बचत हो रही है।

3. उद्योगों का विस्तार - देश में लघु, मध्यम एवं बड़े उद्योगों का विकास हुआ।

4. निर्यात में वृद्धि - भारत द्वारा उत्पादित वस्तुओं का निर्यात बढ़ा है।

5. प्रौद्योगिकी हस्तांतरण - विदेशी कंपनियों के माध्यम से नई तकनीक भारत में आ रही है।

6. स्थानीय उत्पादों को वैश्विक पहचान - 'वोकल फॉर लोकल' भावना को बल मिला है।

मेक इन इंडिया की चुनौतियाँ

1. उच्च गुणवत्ता की आवश्यकता - वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए गुणवत्ता में सुधार आवश्यक है।

2. कुशल श्रमिकों की कमी - प्रशिक्षित जनशक्ति की उपलब्धता एक बड़ी चुनौती है।

3. पर्यावरणीय प्रभाव - उत्पादन वृद्धि से पर्यावरणीय खतरे भी उत्पन्न हो सकते हैं।



4. नीतिगत अड़चनें - कभी-कभी नीतियों में अस्थिरता और जटिल प्रक्रियाएं उत्पादन को प्रभावित करती हैं।

5. कोविड 19 का प्रभाव - वैश्विक महामारी के कारण आपूर्ति श्रृंखला बाधित हुई।

उदाहरण और उपलब्धियाँ

एप्पल, सैमसंग जैसी कंपनियाँ अब भारत में मोबाइल निर्माण कर रही हैं।

महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु आदि निवेश के प्रमुख केंद्र बने हैं।

डिफेंस सेक्टर में भारत अब हथियार और उपकरणों का निर्माण और निर्यात कर रहा है।

उद्योगों की संख्या वृद्धि और स्टार्ट-अप इंडिया मिशन से नवाचार को बढ़ावा मिला है।

विश्व बैंक की ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस रैंकिंग में भारत की स्थिति में सुधार हुआ है।

सरकार द्वारा उठाए गए कदम

उद्यम पोर्टल - छोटे व्यवसायों के लिए एकीकृत सुविधा।

आत्मनिर्भर भारत अभियान - स्थानीय उत्पादन और आत्मनिर्भरता पर बल।

उत्पादन से जुड़ा प्रोत्साहन योजना - उत्पादन करने वाली कंपनियों को विशेष प्रोत्साहन।

मुद्रा योजना - छोटे व्यवसायों के लिए ऋण सहायता।

निष्कर्ष - मेक इन इंडिया केवल एक अभियान नहीं, बल्कि भारत की आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में एक क्रांति है। इससे न केवल देश की आर्थिक स्थिति में सुधार हुई है, बल्कि भारत विश्व स्तर पर एक विनिर्माण शक्ति के रूप में उभर रहा है। यदि इस योजना को सही दिशा में आगे बढ़ाया जाए, तो आनेवाले भविष्य में भारत न केवल आत्मनिर्भर बनेगा, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का केंद्र भी बन जाएगा।

एक दोस्त ऐसा भी!

(एक बचपन के दोस्त को समर्पित)

जिसने है जीना सिखाया,
जिसने है, रोना भूलाया।
जो है खास होता दिल के पास।
एक दोस्त ऐसा भी,
जिस पर हैं विश्वास,
हम आज भी है सुपर स्टार,
हम आज भी हैं फौलाद,
एक दोस्त ऐसा भी,
जो करता है प्यार,
बन के रहता है परिवार,

कृष्ण कुमार रजक
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर,
पूर्व रेलवे, डीजल/ इलेक्ट्रिक शेड, वर्द्धमान

जो भागता है दूर सुख में,
जो दुख में आता है हाथ,
एक दोस्त ऐसा भी,
जो उहासों के आलम में भी,
हंसी के पैगाम दे जाता है,
थका हारा रहूँ जितना भी,
दिल को वो सुकून दे जाता है।
एक दोस्त ऐसा भी,
जो होता है हरदम साथ,
वनके रहता है हमराज।



आजाद हिंद फौज की पहली महिला जासूस: नीरा आर्य

बिकाश कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

पूर्व रेलवे, हावड़ा

“सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।।”

सचमुच रामनरेश त्रिपाठी की उक्त पंक्तियाँ देश-प्रेम एवं राष्ट्र-भक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। इन पंक्तियों के स्मरण मात्र से मन-मस्तिष्क में देश-भक्ति की भावना उमड़ पड़ती है। इतिहास गवाह है कि भारत को अंग्रेजों की गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति दिलाने में बहुत से स्वतंत्रता सैनानियों एवं क्रांतिकारियों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। चाहे हम भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, उधम सिंह, लाला लाजपत राय की बात करें या फिर नेताजी सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी जैसे कुशल नेताओं की बात करें, सबने देश की आजादी में अपना अमूल्य योगदान दिया। इन्हीं लोगों के बीच कुछ ऐसे भी सेनानी रहे हैं जिन्हें इतिहास के पन्नों में स्थान नहीं मिला। नीरा आर्य एक ऐसी ही महिला जासूस थी जिन्होंने देश-सेवा को अपने जीवन से आगे रखा।

नीरा आर्य का जन्म 5 मार्च 1902 को उत्तर प्रदेश के बागपत के खेकड़ा नगर में हुआ था। इनके पिता सेठ छज्जूमल अपने शहर के एक बहुत बड़े व्यवसायी थे। इनके व्यापार का प्रमुख केंद्र कोलकाता महानगर था जहाँ नीरा आर्य और उनके भाई बसंत की शिक्षा-दीक्षा पूरी हुई। नीरा आर्य का विवाह श्रीकांत जयरंजन दास के साथ हुई थी जो ब्रिटिश भारत में सीआईडी इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे। दोनों की विचारों में जमीन-आसमान का अंतर था। जयरंजन दास सत्तालोलुप मानसिकता से अभिप्रेरित व्यक्ति था जो स्वार्थवश अंग्रेजों की जी-हुजूरी करता था वहीं दूसरी ओर नीरा

आर्य एक सच्ची राष्ट्र भक्त थी। राष्ट्र कल्याणवश अपने पति का त्याग करने से भी पीछे नहीं हटी। देश-प्रेम एवं राष्ट्र-भक्ति हेतु वह अपना सर्वस्व त्यागने के लिए सदैव तत्पर रहने वाली वीरांगना स्त्री थी।

इतिहास ने सदैव वीर पुरुषों का ही गुणगान किया है एवं उनके योगदानों को पूजा एवं सराहा है, लेकिन देश की स्वतंत्रता संग्राम में अनेक ऐसी महिला वीरांगनाओं ने अपनी अप्रतिम वीरता, शौर्य एवं साहस का परिचय दिया है, जिन्हें इतिहास ने विस्मृत कर दिया है। ऐसी ही वीरांगनाओं में नीरा आर्य का स्थान सर्वोपरि है। नीरा के क्रांतिकारी व्यक्तित्व के कारण ही नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें झांसी रेजिमेंट में शामिल कर लिया। तत्पश्चात नीरा अपनी महिला साथियों के साथ अंग्रेजों की छावnicियों में जाकर अंग्रेजों की जासूसी करने लगी। उनके तेज तर्रार व्यक्तित्व एवं क्रांतिकारी स्वभाव को देखते हुए नेताजी ने उन्हें ‘नीरा नागिनी’ की उपाधि से संबोधित किया।

नीरा आर्य का अंतिम जीवन बड़ा ही कष्ट एवं पीड़ा में व्यतीत हुआ। अंग्रेजी के गुलाम पति जयरंजन दास की हत्या करने के बाद नीरा को सेंट्रल जेल अंडमान में ले जाया गया। वहाँ उनसे ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध किए जाने वाले षड़यंत्रों एवं नेताजी के योजनाओं एवं क्रियाकलापों के बारे में पूछताछ की गई। उन पर तरह-तरह से दबाव बनाया गया कि वे सारी खूफिया जानकारी ब्रिटिश सरकार को बताए। इस क्रम में उन्हें असहनीय यातनाएँ भी सहनी पड़ी। लेकिन नीरा ने यहाँ भी देश के प्रति अपनी समर्पित भक्तिभाव का परिचय देते हुए देशहित हेतु मौन रही। जेल में रहकर भी उन्होंने जासूसी करना नहीं छोड़ा। अपने एक लेख में उन्होंने लिखा है “मेरे साथ एक सरस्वती राजमणि नाम की लड़की भी थी जो कि बर्मा की रहने वाली थी और उम्र में मुझसे छोटी



थी। हम दोनों ने ब्रिटिश अधिकारियों के घरों पर और सैन्य शिविरों में अंदर घुसने के लिए लड़कों की वेशभूषा अपनाई थी ताकि हम जासूसी कर सकें और नेताजी को जानकारी भेज सकें।”

नीरा आर्य के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उनका स्वाभिमानी व्यक्तित्व है। उसने निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा हेतु स्वयं को देश की पुण्य वेदी पर न्यौछावर कर दिया परन्तु इसके एवज में भारत सरकार व प्रशासन से कुछ भी नहीं मांगा। देश की आजादी में अपनी महत्ती भूमिका निभाने वाली नीरा को हैदराबाद की सड़कों पर फूल बेचकर अपना जीवन निर्वाह करना पड़ा। प्रशासन द्वारा सरकारी जमीन पर बनाई गई उनकी झोंपड़ी को

तोड़ा गया, तब भी वह चुप रही। उसने किसी प्रकार की सरकारी सहायता स्वीकार नहीं की। यह दुर्भाग्य की बात है कि जिस वीरांगना ने देश की आजादी में अपना सर्वस्व समर्पित किया, उसे इतिहास के पन्नों में छोटा-सा भी स्थान प्राप्त नहीं हुआ।

भले ही इतिहास ने शौर्य और साहस की अप्रतिम मूर्ति नीरा आर्य के योगदानों को विस्मृत कर दिया है, लेकिन हम भारतवासी सदैव उनकी योगदानों को अपने अन्तःहृदय में आत्म-सात कर उन्हें सदैव जीवित और अमर बनाएंगे और देश की युवा पीढ़ी को उनके देश के प्रति किए गए त्याग और बलिदान से अवगत करवाते रहेंगे।

स्टेशन मास्टर

कुमार विकास

स्टेशन मास्टर, पाकुड़

स्टेशन की घंटी जैसे ही बजे,
हर सुबह वही दिनचर्या सजे।
हाथ में फोन, आँखों में ध्यान,
रेल की रफ्तार का वो रखे ख्याल।
धूप हो या बारिश की बूँदें,
हर वक्त ड्यूटी पर तैनात हो बंदे।
ट्रेन की सीटी, यात्री का शोर हजार,
फिर भी दिल में रखे सतर्कता से प्यार।
हर मुसाफिर की राह का रखवाला,
टाइम टेबल का वो सच्चा रखता खयाल।
कभी न थके, न बोले कुछ बात,
बस निभाए अपना फर्ज दिन-रात।
कभी प्लेटफॉर्म पर दौड़ता दिखे,
कभी कंट्रोल से फ़ोन पे टिके।
एक मुस्कान में छुपे कई हाल,
रेल की धड़कन स्टेशन की जान
स्टेशन मास्टर की जिम्मेदारी कमाल।

आधुनिक बचपन

संजीव कुमार पटेल

तकनीशियन-1, वर्द्धमान डीजल शेड

एक नन्हा शिशु,
बादल से उतरती
बूँदों में भीग जाने को,
करता मन।
सर्दी से नहीं,
घबड़ाता वह,
उसे तो उन नन्हीं बूँदों
को अपने हाथों में,
तनिक देखने की इच्छा है।
उसे नहीं मालूम,
क्या होगा भीगने से,
पर भीगता है।
उसकी माँ जानती है,
उन नन्ही बूँदों के फुहारों को।
भविष्य के दुखद क्षण को पहचानती है,
इसलिए नहीं भीगने देती, अपने नन्हे को।
हे माँ, करुणामयी माँ,
तुने अपने नन्हे को,
मौन, क्षणिक उसके लुभावनी रोग से,
मान बचाने के लिए,
उसके बचपन का गला घोट दिया।



जूते की मेहरबानी

नितेश कुमार सिंह

तकनीशियन, लोको शेड, वर्द्धमान

आज मैं जब अपने घर में बैठा किताब पढ़ रहा था। बगल वाले घर के कमरे से भयंकर गंभीर आवाज कानों से आ टकराई। वह शायद अपने बच्चे को किसी बात-बात पर अकारण डांट रहा था। अभी यह काम करके लाओ नहीं तो मुँह में जूता, नालायक, पाजी।

यह रोज की आदत थी। रोज किसी न किसी बहाने वह लड़का जिसे खुद जूता तो क्या चप्पल भी नहीं मिलता था, पर मार खाता था। वह जूता तो घिस भी चुका था पर ये कहना मुश्किल है कि पहनकर चलने से घिसा है या फिर...

उस बेचारे मारने वाले को इतना भी मालूम नहीं कि इस घिसे जूते से मारने पर उसके लड़के को लगता है या नहीं पर उसे इतना जरूर मालूम हो गया है कि उससे मारने पर जूते का सोल जरूर घिस रहा है, इसीलिए तो दिन पर दिन वह घिसता ही जा रहा है। पिछले महीने ही तो वह नया जूता खरीदा था। पिछले दिन ही जूते से मारते ही एक ही वार में जूते का मुँह फैल गया और उधर उस लड़के का और मारने वाले का भी मुँह फैल फैल गया। उन तीनों में अन्तर केवल इतना ही था कि फटे जूते से सड़ा, चिसा एवं फंटा चमड़ा दिख रहा था लड़के के फैले मुख के कुछ कीड़े खा चुके दांतों में हँसी झलक रही थी और मारने वाले का फैला मुख आश्चर्य की प्रतिमा प्रतीत हो रही थी। वह सोच रहा था कि आजकल के जूते कितने कमजोर होते जा रहे हैं एवं इतनी जल्दी कुड़े के गाल में समा जाते हैं। मानो ये बचपन से ही तपेदिक, यक्ष्मा आदि भयानक बीमारी साथ लाए हों और ये (जूते) हमारे घर तब आते हैं जब इनकी आखिरी साँस चल रही होती है। तब के जूते की तुलना में आजकल जूते भी क्या जूते हैं।

तब के जूते की तुलना में आज के जूते नगण्य हैं। जन्म तक पीछा नहीं छोड़ते थे। कोई भी यदि उस जूते को एक बार अपना बना ले तो वह जीवन भर साथ नहीं छोड़ता था मानों वह उसका जीवन साथी बन गया हो। पता नहीं तब के जूते कौन-सी कंपनी बनाती थी। आज की बाटा आदि कंपनियाँ तो उसकी तुलना में भी नहीं आती। हाँ- तो जब पुरुषों के लिए जीवनसंगिनी रुपी जूते बनने लगे तो स्त्रियाँ पीछे क्यों रहती? उन्होंने भी अपनी एक अलग कम्पनी की स्थापना

की। सेंडिलें बनाकर बाजार में भेजने लगीं और वह सेंडिल स्त्रियों के लिए एक सुरक्षात्मक हथियार के रूप में चर्चित हो गई जिसके एक ही वार से अच्छें-अच्छें के होश ठिकाने आ जाते हैं एवं दिन में तारे नजर आने लगते हैं। उस सेंडिल की एड़ी तीन-चार ईंच ऊँची उठी है मानो वह पुरुषों के जूतों को नीचा दिखा रही हों या स्त्रियों को आसमान छूने की ऊँचाई तक पहुंचाने की चेष्टा कर रही हों जिससे वे नीले छतरी के तारों और चाँद सूरज को तोड़कर अपने पैरों पर डाल सकें। आश्चर्य की बात नहीं होगी जब वे इस ऊँची सेंडिल के सहारे इतनी ऊँची उठ जाएगी कि उसका सुन्दर मुख एवं काले धने केश तक भी न दिखाई दे। तब आनेवाले भविष्य के कवि सौन्दर्य-चित्रण करने से वंचित रह जाएंगे। वे आजकल के ग्रन्थों को पढ़कर केवल यह कहेंगे कि एक जमाना था जब स्त्रियों के भी सुन्दर मुख हुआ करते थे और जिस पर घने काले केशों की लटें खेला करती थी, और जब यह वाक्य वह कवि कहेगा तभी ऊपर से एक अस्पष्ट-सी ध्वनि सुनाई देगी कि अभी भी हमारे मुख है, दो नयन हैं और एक सुंदर-सी नाक भी है और वह आवाज इतनी धीमी और इतनी ऊँचाई से सुनाई देगी कि तब के मनुष्य सोचेंगे कि आकाशवाणी हो रही है और नारियाँ यह समझते-समझते माथा पीट लेंगी कि यह आकाशवाणी नहीं यह किसी की वाणी है जिसके एक ही बाण से कई मनुष्य धाराशायी किए जा सकते हैं। इससे एक लाभ, हो सकता है। वह यह कि आजकल अन्य ग्रहों के बारे में जानने की रुचि वैज्ञानिकों की जोरों पर है। वे एक से बढ़कर एक ग्रह अंतरिक्षयान भेज रहे और यही तस्वीर मिल रहा है कि वहां कोई जीवित चीज नहीं रहती। मेरा ख्याल है कि चाँद और सूरज पर ही नहीं अन्य सभी ग्रहों पर हमारी ही तरह 'सभ्य' मनुष्यों का राज है और प्रत्येक ग्रह चक्कर लगाता रहता है जिस प्रकार घड़ी की सुई। वे आज तक चक्कर लगा रहे हैं। मानो उन सब की घड़ियों को चाभी देने वाला एक ही बार अनन्त जीवन की चाभियाँ देकर मर गया हो और ये ग्रह यूँ ही घूमते रहेंगे जब तक कि इनमें से किसी का पुर्जा ही न टूट जाय।

अरे बोलने दीजिए मुझे। रुकिए आप सारे एक साथ मत बोलिए। माना कि मैं भी तो एक वैज्ञानिक हूँ ये अलग



बात है कि मैट्रिक में मैं विज्ञान में लगभग फेल था और आर्ट्स लेकर पढ़ा हूँ। आज ही मैंने न्यूटन की तरह देखा कि आम तोड़ने के लिए बच्चों द्वारा मारे गए ढेलों में से एक ढेला मेरे सिर पर आकर गिरा। मैं भी सोच रहा हूँ कि वह ढेला, आम पर न लगकर मेरे सिर पर ही क्यों गिरा? आज नहीं तो कल में भी न्यूटन की तरह महान वैज्ञानिक बनूँगा। पर अभी दूर की बात छोड़िए मैं आज आप सबको यह बताने जा रहा था कि भविष्य में स्त्रियों की सहायता से ग्रहों की जानकारी मिलती रहेगी। क्योंकि वे तब सैडिलों की सहायता से आसमान तक की ऊँचाई तक पहुँच जाएंगी और जब हम कहेंगे कि देखो तो वृहस्पति ग्रह पर एक भी मानव है कि नहीं, तब वह गर्दन ऊंची करके देख कर कहेंगी कि हाँ जनसंख्या है और एक आदमी अपनी प्रेमिका के साथ किसी पार्क में बैठा है। मैं जब कहूँगा कि उन दोनों को पकड़ कर लाओ तब वह केवल हाथ ऊपर बढ़ाएंगी और उन दोनों को पकड़कर पृथ्वी पर रख देंगी। तब हमारा प्रयोग कितना आसान हो जाएगा। है न! कितना लाभदायक सुझाव।

भविष्य की ये सब बातें जब सोच रहा था तभी फिर वही जूते से मारने वाली गंभीर आवाज मुझे वर्तमान में खींच लाई। शायद वह उस लड़के को जूता मार रहा था। मुझे भी एक खीस सी लगी। अरे! मारना है तो हाँथ मारो, पाँव मारो, मुँह मारो, कुछ भी मारो पर बेचारे जूते पर तो, तरस खाओ। हाथ से मारोगे तभी तो समझ आएगी कि चोट किसको कहते हैं और दर्द क्या चीज है। जूते का अंतिम सत्य यह नहीं है कि वह केवल मारने के लिए बना है। जूते की महिमा भला लोग क्या जानें। बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ आदि महान व्यक्ति राजनीति के गहरे नदी में हाथ-पाँव मारते रहे। कुछ तो किनारे पहुँच गए पर उन्हें भी यह नहीं मालूम कि इस जूते की ही वजह से वे अभी इतने बड़े राजनेता बने बैठे हैं। उन्होंने कितने ही जूतों को, चुनाव में अपनी जीत बनाने के लिए इधर से उधर दौड़कर घिस डाला और चुनाव जीतने पर वे सब घिसे जूते उनके लिए एक यादगार स्मृति रह जाती है। हारने पर भी उन जूतों का महत्व नहीं घटता है। आम आदमियों के जूते भी कभी-कभी कम महत्व नहीं रखते हैं। उदाहरण के तौर पर होली के उत्सव की शाम जब अबीर लगाने की बारी आती तो बहुत से लोग जिन्हें अबीर अच्छा नहीं लगता या वे लोग जो उम्र में बड़े हो चुके हैं और जिन्हें केवल पैरों पर ही अबीर लगाया जा सकता है वे अपने पैरों को अबीर से बचाने के लिए अपने पैरों में जूते पहन लेते हैं। ये जूते उस

दिन उन्हें सुरक्षा की देवी प्रतीत होती हैं। यदि उन्हें हम जैसा कोई लफंगा दिखाई देने वाला युवक हाथों में गुलाल लेकर आगे बढ़ता है तो वे झट से कहते हैं बेटे हम उम्र में तुमसे बड़े हैं। अतः मेरे पैरों पर अबीर लगाओ। इतने दिनों तक हम उन्हें लफंगा, आवारा, नालायक और बेकाम की औलाद लगते थे। पर आज उनकी वाणी में ममता झलक रही है, प्यार की खुशबू आ रही है। जब हार कर उनके चरणों पर अबीर लगाने झुकते हैं.. तो यह देखते हैं कि उनके चरण तो दिखाई ही नहीं तो दे रहे हैं। अतः जूते को ही 'होली की अबीर' लगा कर प्रणाम कर लेते हैं। इस तरह उनकी बात भी रह जाती है और जूते का महत्व भी बढ़ जाता है। इसी विचार के मेरे दादा थे और उन्होंने अपने जीवन के अंतिम 50 वर्षों के 50 जूते सीसे में बन्द कर रखे हैं और प्रत्येक पर अबीर लगे हुए हैं। उन जूतों के आज भी सहेज कर रखा गया है उन जूतों के आगे यह भी लिखा गया है कि वे जूतें किस वर्ष के हैं, उन्हें कहाँ से खरीदा गया है, कितने मूल्य हैं.. आदि आदि। इन जूतों का महत्व बहुत अधिक है जो मेरे दादा के यादगार से जुड़े हैं। सोचते सोचते चार बज गए और दुकान खोलने का समय हो गया। जल्दी ही अपनी दुकान पहुँचना था। जी हाँ! अपनी दुकान, जूते चप्पल की अपनी दुकान। वहीं चौराहे मोड़ के आगे, रेलवे पुल के उस पार, अपनी उस राशन दुकान के दाहिनी ओर मुड़कर, लाला मुनरी चंद्र की चुनरी की दुकान के बगल में ही मेरी यानि बाराचंद की 'बाटा' के जूतों की दुकान है। आप सोच रहे होंगे कि इतनी देर तक मैं आपको जूते का भाषण सुना दिया। पर सुनाऊँ भी क्यों नहीं उन जूतों का ही कमाल है कि आज मैं एक स्कूटर पर आने-जाने के काबिल हो सका हूँ।

बचपन में मैं गाना गाता था, गाना सुनकर ये स्कूटर मुझे उपहार मिले और कुछ जूते मैंने पूजा-मण्डप या अन्य किसी समारोह से चोरी किए हैं जिसे बेचकर आज मैं एक दुकान का मालिक बन गया हूँ मेरी दुकान चलने का एक और राज है। जब कोई शादीशुदा प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए बगल वाली दुकान से चुनरी खरीदता है तो उसकी भलमन साहत, हमारी दुकान से जूते-चप्पल या सैडिल खरीदकर ले जाती है। अब मैं दुकान के आगे बैठे आवाज लगा, रहा था, ले लो एक जूते ले लो। क्या एक जूते दूँ? तभी एक मजाकिया व्यक्ति ने आकर कहा नहीं मैं तो जूते नहीं लूँगा पर यदि तुम्हें चाहिए तो दो-चार जूते हाजिर करूँ? मैंने भी कहा, तुम्हारे लिए तो यहाँ के सौ जूते मेहरबान होंगे। क्या उनमें से एक हूँ?



घर-वापसी

दीप्ति महतो

पत्नी-कार्तिक महतो

सामान्य सहायक, राजभाषा अनुभाग, पूर्व रेलवे, हावड़ा

सजल बाबू ने लगभग सभी तैयारियां कर ली थी। माल परिवहन एजेंसी, पैकर्स एवं मूवर्स से घर के सारे सामानों के परिवहन हेतु उनकी बातचीत हो चुकी थी। पोते-पोतियों एवं नातियों के लिए खिलौने, बेटे और बेटियों के लिए कपड़े, घर की नवेली बहु के लिए साड़ी एवं अपनी धर्मपत्नी सावित्री के लिए चाँदी के पायल आदि सामानों की खरीदारी कर चुके थे। अब उनकी वह मुराद पूरी होने वाली है, जिसके सपने वे कई दिनों से देख रहे हैं। मन के अंदर की खुशी को दबाकर वे सारे बचे हुए काम जल्द से जल्द करने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं। तभी उनको स्मरण हुआ कि वे बिजली विभाग को तो पत्र देना ही भूल गए। वह तुरंत अपनी मोटर साइकिल निकालते हैं और कार्यालय की ओर रवाना हो जाते हैं।

पिछले 27 वर्षों से सजल बाबू पूर्व तट रेलवे, खोर्धा मंडल के अंतर्गत स्थित ब्रह्मपुर स्टेशन पर मालगाड़ी के गार्ड के रूप में कार्य कर रहे थे। रेलवे में सबसे व्यस्तम ड्युटी रेलवे के गार्ड की होती है। पूरी सेवा अवधि में उन्होंने धैर्य, लगन और ईमानदारी पूर्वक काम किया, लेकिन अब वे सेवानिवृत्त होकर वापस अपने घर पश्चिम बंगाल के बर्द्धमान जिले कटवा अंचल लौटने वाले थे। सेवानिवृत्ति के पश्चात की कपोल कल्पनाओं में विचरण करते हुए वे अपने कार्यालय पहुँचते हैं और बिजली विभाग के बड़े बाबू से कहते हैं, बड़ा बाबू यह चिट्ठी लीजिए और मेरे क्वार्टर का बिजली कट करवा दीजिए। बड़ा बाबू बड़े ही सज्जन व्यक्ति थे। उन्होंने चिट्ठी पढ़ी और मुस्कराते हुए बोले- जी हाँ करवा दूँगा। आप चिंता मत कीजिए।

आज वह समय आ गया, जब उनके विभाग से उनकी विदाई होने वाली है। सहकर्मियों ने उनके लिए एक भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया है। सभी ने अपने-अपने ढंग से सजल बाबू की कर्मठता, आपसी सहयोग एवं योगदानों को बताते हुए उनके आगामी जीवन की शुभाकामनाएं दी। सबकी बातों को सुनकर सजल बाबू

थोड़े भावुक हो जाते हैं और उनकी आँखें भर उठती हैं। वे यह आश्वासन देते हैं कि जीवन भर वे अपने सहकर्मियों के संपर्क में रहेंगे और भविष्य में कभी भी सहकर्मियों को या फिर रेलवे प्रशासन को उनकी आवश्यकता हुई तो वे सदैव हाजिर रहेंगे। कुछ सहकर्मी जो सदैव उनके हृदय के निकट रहे, उन्होंने रेलवे स्टेशन तक आकर उनको विदाई दी। प्लेटफार्म नंबर 01 पर गाड़ी संख्या 12842 (कोरोमंडल एक्सप्रेस) के आने का एनाउंसमेंट भी हो गया। बस कुछ ही समय में गाड़ी प्लेटफार्म पर पहुँचने वाली थी। सभी मित्रों से गले मिलने के बाद गाड़ी पर चढ़े। साइड लोअर की विंडो सीट पर बैठकर सजल बाबू ने सभी से सदैव प्रसन्नचित रहने की कामना की। इतने में गाड़ी के खुलने की सीटी बजी और ट्रेन पटरियों पर धीरे-धीरे दौड़ने लगी।

सभी सहकर्मियों को छोड़कर जाते हुए वे भावविभोर हो जाते हैं। खिड़की पर सिरहाने रखकर कुछ यादगार क्षणों को याद करते-करते न जाने कब उन्हें नींद आ जाती है और वे सो पड़ते हैं। मानों थोड़े समय के लिए ही सही उन्होंने अपने घर के प्रति मोह को भुला दिया हो। चाय-चाय की आवाज सुनकर सजल बाबू की नींद टूटती है, और जल्दी-जल्दी अपना सामान लेकर प्लेटफार्म पर उतरते हैं। प्लेटफार्म पर उतरते ही वे भीड़ को काटते हुए आगे बढ़ते हैं। उन्हें देखकर मानो ऐसा लग रहा था कि उनके पैरों में पंख लग गए हैं। उनमें एक नई प्रकार की ऊर्जा का संचार होता हुआ दिखाई दे रहा था।

सजल बाबू को लगा कि घर के सभी लोग उनके आने की राह देख रहे होंगे। उनके स्वागत में घर को सजाया गया होगा। धर्मपत्नी ने उनके लिए आज ढेर सारे पकवान बनाए होंगे। इसी धुन-बुन में वे घर पहुँचते हैं और जैसा उन्होंने कल्पना किया था उसे वास्तविक होता देख वे अत्यंत प्रसन्न होते हैं। उनके मन के अंतःकरण से आवाज आती है कि आज सच में उनकी घर-वापसी हो गई है।



कार्यालयी प्रयोग हेतु अंग्रेजी हिन्दी के व्यवहारिक पर्याय

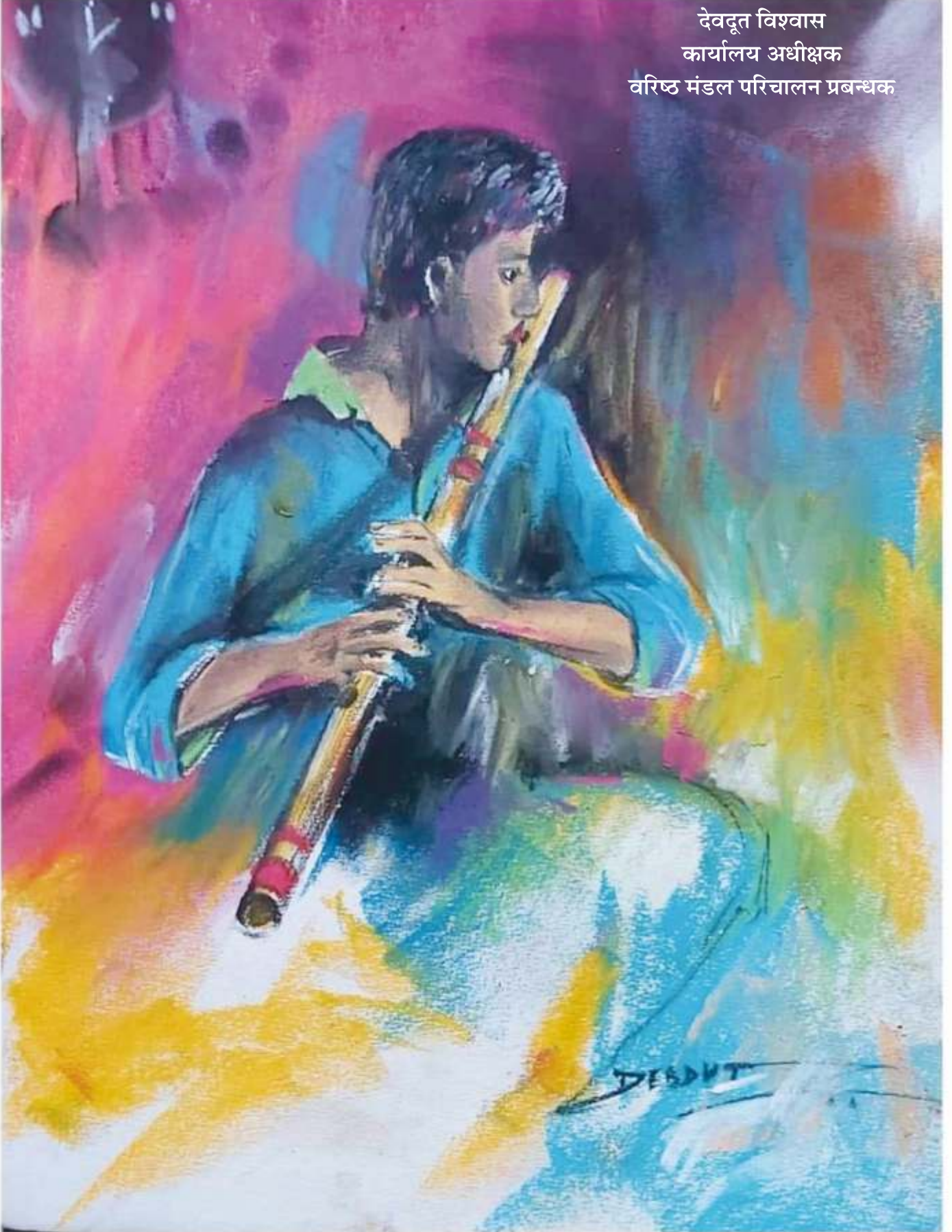
Approved	अनुमोदित
Agreed	सहमति है, मैं सहमत हूँ
Above mentioned	ऊपर उल्लिखित
As modified	यथा संशोधन यथा परिवर्तित
A brief note is placed below	संक्षिप्त नोट नीचे प्रस्तुत है
Advance of T.A. is sanctioned	अग्रिम यात्रा भत्ता मंजूर है
Administrative approval is necessary	प्रशासनिक अनुमोदन आवश्यक है
All concerned may please be advised	सर्वसंबंधित को सूचित किया जाय
Advise accordingly	तदनुसार सूचित करें
Action may be taken as proposed	प्रस्तावित कार्रवाई की जाए
Actual expenses incurred may be paid	वास्तविक खर्च का भुगतान किया जाय
Agenda of the meeting is enclosed	बैठक की कार्यसूची संलग्न है
As early as possible	यथाशीघ्र
Above Cited	उपर्युक्त
Action at once please	कृपया तुरंत कार्रवाई करें
Action has already been taken in the matter	इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है
Advise further development	आगे की प्रगति से अवगत कराएँ
After discussion	विचार-विमर्श के बाद
Against/within the extant rules	वर्तमान नियमों के विपरीत के भीतर
A matter of extreme urgency	अत्यंत आवश्यक मामला
Annual reviews in progress	वार्षिक समीक्षा की जा रही है
Appeal has been rejected	अपील नामंजूर कर दी गई है
Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान कर दिया जाए
Articles asked for are out of stock	मांगी गई सामग्री स्टॉक में नहीं है
As already pointed out	जैसा कि पहले बताया जा चुका है
as and when	जब और जैसे
As a special Case	विशेष मामले के रूप में
As laid down in the rules	जैसा कि नियमों में निर्धारित है
As per ruel	नियमतः नियमानुसार
As required under the rules	जैसा नियमों के अधीन अपेक्षित है
Beg to State	निवेदन है
Beyond the jurisdiction	अधिकार क्षेत्र से परे
Ban on creation of posts	पदों के सृजन पर रोक
Bill has not been prepared correctly	बिल सही नहीं बनाया गया है
Budget provision exist	बजट में व्यवस्था है
Brief for the meeting are being prepared	बैठक के लिए ब्रीफ तैयार किया जा रहा है
Checked and found correct	जांच की और सही पाया
Call for explanation	स्पष्टीकरण मांगा जाय
Carry out orders	आदेशों का पालन करें
Case has been closed	मामला समाप्त कर दिया गया है



Case is put up for orders please
 Case is under investigation
 Charge handed over
 Contract may be terminated
 Currency of the post expires on
 Consolidated report may be furnished
 Concurrence of the Finance deptt. is necessary
 Competent Authority's sanction is necessary
 Competent Authority may kindly decide
 Call for quotation
 Clarify the position
 Draft, as amended, is put up
 Due to unavoidable circumstances
 Discussed
 Delay is regretted
 Draft is put for approval please
 Discuss with papers
 Discrepancy may be reconciled
 Extension of service
 Eviction proceeding initiated
 Extension of leave is sanctioned
 Ex-Cadre post
 Entered in the register
 Explanation may be called for
 Enquiry may be completed
 For Persual please
 For approval please
 Furnish Details
 Final withdrawal for house
 Fix a date for the meeting
 Funds Available
 For Sympathetic consideration
 Forwarded
 Further action not necessary
 General Manager's sanction to be obtained
 Grand of honorarium
 Give priority
 Give details
 I do not agree with the portion at a above
 I invite your attention to this Important fact
 In anticipation of your approval
 In any case

मामलें आदेशार्थ प्रस्तुत है
 मामले की जांच पड़ताल की जा रही है
 कार्यभार सौंप दिया गया
 संविदा समाप्त कर दी जाए
 पद की अवधि दिनांक..... को समाप्त होगी
 समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए
 वित्त विभाग की सहमति आवश्यक है
 सक्षम प्राधिकारी को मंजूरी आवश्यक है
 सक्षम प्राधिकारी कृपया निर्णय दें
 कोटेशन मांगा जाए
 स्थिति स्पष्ट करें
 यथासंशोधित प्रारूप प्रस्तुत है
 अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण
 विचार-विमर्श किया गया
 विलंब के लिए खेद है
 मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है
 संबंधित कागजात लेकर चर्चा करें
 विसंगतियों को ठीक किया जाए
 सेवा अवधि बढ़ाना (विस्तार)
 बेदखली की कार्यवाही शुरू की गई
 छुट्टी की अवधि बढ़ाने की मंजूरी दी जानी है
 संवर्ग वाह्य पद
 रजिस्टर में दर्ज किया गया
 स्पष्टीकरण मांगी जाए
 जांच पूरी कर रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत की जाए
 कृपया देखें
 अनुमोदन के लिए
 व्यौरा प्रस्तुत करें
 गृह निर्माण के लिए अंतिम निकासी
 बैठक की तारीख निश्चित करें
 निधि उपलब्ध है
 सहानुभूतिपूर्वक विचार के लिए
 अग्रसारित
 आगे की कारवाई आवश्यक नहीं
 महाप्रबंधक की मंजूरी प्राप्त की जानी है
 मानदेय की मंजूरी
 प्राथमिकता दें
 विवरण प्रस्तुत करें/व्यौरा दें
 ऊपर ए में अंकित अंश से सहमत नहीं हूँ
 मैं इस महत्वपूर्ण तथ्य की ओर आपका ध्यान दिलाता हूँ
 आपके अनुमोदन की प्रत्याशा में
 किसी भी हालत में

देवदूत विश्वास
कार्यालय अधीक्षक
वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबन्धक





राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित कुंजियन प्रशिक्षण का आयोजन



हावड़ा मंडल राजभाषा विभाग द्वारा डॉ. हरिवंश राय बच्चन का जयंती पालन

राजभाषा पखवाड़ा के समापन की कुछ झलकियाँ

